(1) राधाकृष्णन् आयोग →

राधाकृष्णन आयोग को को विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के नाम से जाना जाता है। परन्तु इसमे प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित विषयों के बारे मे बताया गया है। इसमे विद्यालयी विषयों का सम्बन्ध प्रमुख रूप से जीव विज्ञान, गणित एवं धर्म से किया गया। आयोग द्वारा अनुशंसा की गयी कि क्षेत्रीय एवं प्रमुख भारतीय भाषाओं को माध्यम बनाकर अन्य विषयों की शिक्षा प्रदान की जाय तथा अंग्रेजी भाषा का सामान्य ज्ञान भी छात्रों को दिया जाय।

(2) माध्यमिक शिक्षा आयोग →

माध्यमिक शिक्षा आयोग को मुदालियर आयोग के ~~माध्यम~~ नाम से जाना जाता है। इस आयोग ने उच्च माध्यमिक स्तर पर मानव, विज्ञान तकनीकि, वाणिज्य, कृषि विज्ञान, ललित कलाएं एवं गृह विज्ञान को सम्मिलित किया तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर पर भाषाओं, समाज विज्ञान, गणित, कला, संगीत, शिल्प तथा शारीरिक शिक्षा सम्बन्धी विषयों को सम्मिलित किया। इस प्रकार इस आयोग ने विद्यालयी विषयों में आवश्यक परिवर्तन करके सम सामयिक बनाने का प्रयास किया गया।

अनुशासन

3. भारतीय शिक्षा आयोग के अनुसार विद्यालयी विषय –

इस आयोग के अनुसार निम्न प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था में मातृभाषा, क्षेत्रीय या प्रादेशिक भाषा में से कोई एक भाषा को रखा जायेगा। इसके अतिरिक्त गणित, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, सामाजिक विज्ञान या सामाजिक अध्ययन सृजनात्मक क्रियाएँ कार्यानुभव एवं स्वास्थ्य आदि को विद्यालयी विषयों में स्थान दिया जायेगा। उच्च प्राथमिक शिक्षा में दो भाषाएँ रखी जायेगी जिसमें एक मातृभाषा तथा दूसरी प्रादेशिक या हिन्दी, अंग्रेजी में से एक भाषा होगी। इसके अतिरिक्त गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र कला, कार्यानुभव, समाजसेवा, शारीरिक शिक्षा नैतिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा आदि विषय सम्मिलित किये जायेंगे।

निम्न माध्यमिक स्तर पर भाषाओं की संख्या तीन होगी। अन्य विषयों के रूप में गणित विज्ञान, इतिहास, भूगोल नागरिक शास्त्र कला कार्यअनुभव सृजनात्मक समाज सेवा, शारीरिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा आदि होंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -1986 के अनुसार विद्यालयी विषय →

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार विद्यालयी विषयों में तकनीकि शिक्षा से सम्बन्धित विषयों का प्रावधान किया गया तथा विद्यालयी विषयों को सार्वभौमिक मूल्यों का पोषण करने वाले विषयों के रूप में विकसित करने पर बल दिया गया। चरित्र निर्माण के लिए विद्यालयी विषयों में सामग्री के समावेश की व्यवस्था की गयी। नैतिक शिक्षा पर विशेष बल इसी अवधारणा को ध्यान में रखकर दिया गया।

वर्तमान समय में विद्यालयी विषयों का स्वरूप →

विद्यालयी विषयों का वर्तमान स्वरूप देखा जाय तो इसमें विविध प्रकार के परिवर्तन देखे जा सकते हैं जिस अंग्रेजी भाषा का विरोध हमारे समाज में स्वतन्त्रता पूर्व किया गया था उस अंग्रेजी भाषा को आज प्राथमिक प्राथमिक स्तर से पढाया जाता है। प्राथमिक स्तर से कम्प्यूटर विषय का शिक्षण किया जाता है। जिसके आधार पर छात्रों में तकनीकि शिक्षा के प्रति लगाव विकसित किया जा सके। इसी प्रकार विविध प्रकार के विषय सम्मिलित किये गये।

विशेष सामाजिक, राजनैति और बौद्धिक अवधारणाओं में विषयो का उदय ⇒

बौद्धिक अवधारणाओं का सम्बन्ध अनुशासनिक ज्ञान की अवधारणा से है। सामान्य रूप से विषयों के मध्यपाये जाने वाले अनुशासन का सम्बन्ध, सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था के मध्य समन्वयन से होता है। विद्यालयी व्यवस्था मे छात्रों को वही विषय पढाये जाते हैं जो कि बौद्धिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ज्ञान की अवधारणा का सम्बन्ध दृढता, वस्तु निष्ठता एवं औपचारिकता से होता है। तीनो प्रकार के ज्ञान की अवधारणा का सम्बन्ध शिक्षाव्यवस्था के माध्यम से सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था मे सामंजस्य स्थापित करना होता है। सामान्यतः यह देखा जाता है कि शिक्षा व्यवस्था मे लाने वाला प्रत्येक परिवर्तन किसी न किसी रूप मे सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था से सम्बन्धित होता है। इसी क्रम से विशेष अवधारणाओ मे विषयो के उदय को अग्रलिखित रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया।

परिवेशीय विषयों का समावेश —

वर्तमान समय में विद्यालय व्यवस्था में परिवेशीय-विषयों का समावेश किया जाता है जिससे सामाजिक व्यवस्था को नवीन दिशा प्राप्त होती है। जैसे- कृषि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान पर्यावरणीय शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा आदि। इन सभी विषयों का प्रमुख सम्बन्ध समाज से होता है।
इन विषयों के मध्य एक अनुशासन जो सामाजिक व्यवस्था में ~~सम्बन्ध~~ सामंजस्य स्थापित करता है इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था या संरचना सामंजस्यपूर्ण रूप में विकसित होती तथा इसमें कोई विसंगति नहीं होती।

विषयों के मध्य सह सम्बन्ध →

विषयों के मध्य पाया जाने वाला सह सम्बन्ध वास्तविक रूप से सामाजिक संदर्भ में ही होता है जैसे - सामाजिक अध्ययन विषय का निर्माण अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, भूगोल एवं समाजशास्त्र आदि विषयों को मिलाकर किया जाता है। इन सभी विषयों का सम्बन्ध समाज से होता है। इस प्रकार विभिन्न विषयों का सह सम्बन्ध एवं उनके मध्य पाये जाने वाली अनुशासनिक दृढ़ता सामाजिक संरचना में सामंजस्य उत्पन्न करती है।